लोक सभा अध्यक्ष ने निर्धनता उन्मूलन को प्रमुखता देते हुए एक महत्वाकांक्षी, व्यापक और न्यायसंगत विकास एजेंडा तैयार करने की भारत की प्रतिबद्धता को दोहराया

हनोई (वियतनाम) 30 मार्च, 2015: माननीय लोक सभा अध्यक्ष, श्रीमती सुमित्रा महाजन के नेतृत्व में एक भारतीय संसदीय शिष्टमंडल अंतर-संसदीय संघ (आईपीयू) की 132वीं सभा की बैठकों में भाग ले रहा है । माननीय लोक सभा अध्यक्ष ने "सतत विकास लक्ष्यः विचारों को मूर्त रूप देना" विषयक सभा को सम्बोधित करते हुए यह विचार व्यक्त किया कि इस सभा की कार्यसूची के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय समुदाय को एक ऐसा अनूठा अवसर मिला है कि वह गरीबी और भुखमरी को समाप्त करने और विश्व को सतत विकास के पथ पर अग्रसर करने की अपनी प्रतिबद्धता दोहरा सकता है ।

उन्होंने इस बारे में भी चिंता व्यक्त की कि विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में सहस्राब्दि विकास लक्ष्य समान रूप से प्राप्त नहीं हो रहे हैं ।

पंडित दीन दयाल उपाध्याय के संपूर्ण मानववाद के दर्शन का उल्लेख करते हुए उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय समुदाय से आग्रह किया कि वे पर्यावरण के मुद्दों पर ध्यान देते हुए अधिक न्यायसंगत विकास के लिए प्रयास करें । उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि भारत साथी देशों को उनके आर्थिक और सामाजिक विकास के लिए सहायता प्रदान कर रहा है । इस संबंध में उन्होंने यह आशा व्यव्त की कि विकसित देश को इस कार्य में अधिक उदारता दर्शाएंगे । माननीय अध्यक्ष ने अंतर्राष्ट्रीय समुदाय के साथ मिलकर निर्धनता उन्मूलन को प्रमुखता देने वाली एक

महत्वाकांक्षी, व्यापक और न्यायसंगत विकास के लक्ष्य वाली योजना तैयार करने की भारत की प्रतिबद्धता व्यक्त की ।

माननीय अध्यक्ष ने यह महसूस किया कि हमारी संस्कृति की कीमत पर किया गया विकास चिरस्थायी नहीं हो सकता । उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय समुदाय से यह भी आग्रह किया कि स्थायी लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए स्वदेशी उपाय किए जाएं । उन्होंने कहा कि सतत् विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने के प्रयास में भारतीय संसद अपनी भूमिका निभाने के लिए तैयार है ।

माननीय अध्यक्ष ने भारतीय संसदीय शिष्टमंडल और अंतर - संसदीय संघ के सदस्य देशों की शानदार मेजबानी के लिए वियतनाम सरकार का भी धन्यवाद किया ।

विशिष्टजनों ने श्रीमती सुमित्रा महाजन के भाषण की समाप्ति पर खड़े होकर सम्मान प्रकट किया ।